ISBN: 978-81-927093-4-5

अंजुमन खैरुल इस्लामस्

पूना कॉलेज
ऑफ आर्टस, साइन्स व कॉमर्स,

कैम्प, पुणे – 411001, महाराष्ट्र

020-26454240, फैक्स - 020-26453707 www.akipoonacollege.ac.in

ज्ञान - विज्ञानं विमुक्तये

हिंदी कथासाहित्य में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श

(इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में)

दि. 27-28 *फरवरी* 2015

संपादक
डॉ. जी. एम. नाज़िरुद्दीन
डॉ. मो. शाकिर बशीर शेख
डॉ. बाबा शेख

हिंदी विभाग द्वारा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, UGC, WRO, Pune

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

अनु क्रम	शोधालेख प्रस्तोता	शोधालेख का विषय	पृष्ठ क्रमांक
1	डॉ. वीणा दाढे	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	12
2	वाघमोडे अमर बन्सीलाल	दुक्खम सुक्खम उपन्यास में स्त्री विमर्श	15
3	डॉ. अरूणा हिरेमठ	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	18
4	प्रा.बहिरम देवेंद्र मगनभाई	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	20
5	डॉ. दीपक तुपे	नारी अस्मिता की तलाश :शेष कामदबरी	23
6	डॉ. सुभाष तळेकर	'रह गई दिशाएँ इसी पार' उपन्यास : स्त्री विमर्श का न्यास	26
7	डॉ. बोईनवाड एन. एन.	अंधेरे का तालाः उपन्यास में नारी संघर्ष	28
8	डॉ. जी. प्रवीणा	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	31
9	डॉ.(श्रीमती) सी.एन.होम्बाली	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में नारी विमर्श	34
10	डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे	मैं अपराधी हूँ उपन्रूास में चित्रित नारी विमर्श	36
11	डॉ. बाबा शेख	अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में नारी विमर्श	38
12	लोहकरे किशोर बळीराम	हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	40
13	मनिषा खर्चाणे	'विजन' उपन्यास में स्त्री विमर्श	42
14	डॉ. मेदिनी शशिकांत अंजनीकर	महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी विमर्श	44
15	डॉ. प्रवीणकुमार न.चौगुले	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी विमर्श	46
16	ऋतुध्वज सिंह	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	50
17	प्रा.राजपूत प्रतापसिंग दत्तुसिंग	'अलका सरावगी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श'	53
18	डॉ. राजश्री भामरे	'भया कबीर उदास' में स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श	55
19	डॉ. इंद्रजीत राठोड	स्त्री विमर्श : नारी अधिपत्य एवं अस्मिता की तलाश	58
20	सायरा बानू काज़ी	मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में मुस्लिम स्त्री विमर्श	60
21	डॉ. संगीता गुप्ता	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	62

Scanned by CamScanner

जिसमें उसके सदियों से पुरुष की कायरता, कामकुता, गुलामी और उसके सभी पापों को मानसिक और शारीरिक रूप से झेला है। कभी धर्म के नाम पर, तो कभी समाज के नाम पर और कभी परिवार के नाम पर उसके अस्तित्व को मिटाकर उसे कर्तव्यों की जंजीरों से जकड़कर त्यागा की सूली पर लटका दिया गया। पुरुषों ने उसे दासी और बेजान वस्तु समझकर उसके साथ मनमाना सुलूक किया। समय परिवर्तन के साथ–साथ महिला लेखन भी तलवार की धार की तरह पैना होता गया। हिंदी उपन्यासों में अनेक नारी पात्र ऐसे भी गढ़े हैं जिन्होंने नारी वादी चेतना का पूर्ण रूप से ग्रहण किया है। किन्तु उसके साथ साथ ही नारी का निरन्तर संघर्ष भी हिन्दी उपन्यासों में हम देख सकते हैं। अपने स्वाभिमान और अपनी नवीन दृष्टि से नारी को अपने व्यक्तित्व को निर्मित करने की प्रेरणा दी है।

संदर्भ

1.आवाँ – चित्रा मुदगल

2.यामिनी कथा– सूर्यबाला

3.हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यास – डॉ.शारदा सारसर

4.महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी – डॉ.हरबंश कौर

5.सूर्यबाला रचना यात्र – डॉ.वेदप्रकास अमिताब

४ मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई
एम.जे.एस.कॉलेज, श्रीगोंदा
जि. अहमदगनर पिन नं. 413701

स्वतंत्रता के बाद उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा आदि ने स्त्री का पारिवारिक कामकाजी, सामाजिक, आँचलिक आदि प्रकार की परिस्थितिओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया। स्त्री विमर्श को हिंदी साहित्य में प्रबल बनाने में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपने उपन्यास एवं कहानी साहित्य द्वारा उपेक्षिता नारी के भारतीय, ग्रामीण एवं महानगरीय परिवेश से जुझते हुए, पारंपरिक नारी संहिता को त्यागकर, पुरुष प्रधान संस्कृति का विरोध करते हुए स्त्री की सत्ता को स्थापित करने का प्रयास किया है। कस्तुरी कुण्डल बलै, गुड़िया भीतर गुड़िया, बेतवा बहती रही, त्रिया हठ, ईदन्नमम, कही ईसुरी फाग, अल्मा कबूतरी, चाक, अगनपाखी, झूलानट, विज़न और गुनाह बेगुनाह इस विशाल उपन्यास लेखन द्वारा उन्होंने भारतीय ग्रामीण अंचल से लेकर महानगरीय जीवन की चकाचौंध को अपनी साहित्यिक और शोध दृष्टि को ईमानदारी से प्रस्तुत किया है।

अवैध स्त्री–पुरुष संबंध, बलात्कार, विवाह विच्छेद की समस्या अपराधी जातियों के स्त्रियों की समस्या आदि के साथ ही व्यवसाय से जुड़ी महिलाओं का संघर्ष एवं त्रासदी को उर्वशी, मंदाकिनी, सारंग शीलो, अल्मा कबूतरी, कदम बाई, भुवन, नेहा, आभा, इला, आदि नारी पात्रों द्वारा मैत्रेयी पुष्पाजी ने स्त्री विमर्श की नीव रखी है। जिसमे हर एक पात्र उस वर्ग की नारी का प्रतिनिधित्व करता है। मैत्रेयी पुष्पा अपनी नायिका सारंग द्वारा कहती है जो पुरुष प्रधान समाज को चुनौति देनेवाला है – " मर्द औरत को छूए है और उसका उद्धार कर देता है ... मगर औरत मर्द को छूए तो उसे पाताल में डूबो दे।"[1] इसी द्वारा हम समज सकते है कि, नारी अपनी शक्ति का प्रयोग

Scanned by CamScanner